ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 253-255
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

उत्तर-आधुनिक सन्दर्भ में प्रस्तुत उपन्यास 'कुरु कुरु स्वाहा'

डॉ0 गीता पांडे

एसोसिएट प्रोफेसर– हिंदी विभाग, शंभूदयाल पी जी कॉलेज, गाजियाबाद (उ0प्र0) भारत

Received- 07.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 17.05.2019 E-mail: -aaryvart2013@gmail.com

सारांश : ***मनोहर श्याम जोशी एक ऐसे लेखक का नाम है जिनके उपन्यास उत्तर आधुनिकता को आमंत्रण देते हैं, "हरिया हरक्यूलीज की हैरानी","ट– टा प्रोफेसर..", "कसप" "कुरु कुरु स्वाहा" इनके चर्चित उपन्यास रहें हैं। इनके साहित्य में उत्तर आधुनिकता सांस्कृतिक बदलाव का स्वरूप लेकर आती है। उत्तर आधुनिकता का सीधा सा मतलब है जहाँ परंपराओं, सिद्धांतों और मोह से परहेज किया जाए। इस मोह से बच निकलने के जहाँ कई कई नए प्रतिरोध भी तैयार हो जाते हैं। उत्तर आधुनिकता में शब्दार्थ का केंद्रवाद जबरदस्त ढंग से टूटा हैं। नए प्रश्न वैश्वीकरण और नए बाजारवाद के तहत उठाए गए हैं जिन्हें सूचना का समाज सहज कर्म की तरह लेता है, नया बाजार,नए उपभोक्ता, नए सांस्कृतिक तर्क साहित्य को बदलने की कोशिश मैं लगे रहते हैं। आधुनिकता के बनाए आदर्शवाद से नई जमीन की ओर बढ़ने का क्रम उत्तर आधुनिकता का फलक है, जहाँ मनोहर श्याम जोशी सरीखे लेखक "कुरु कुरु स्वाहा"जैसे उपन्यास में न जाने कितने तरह की बातें कह जाते हैं जहाँ पर आधुनिकता की सीमा को बखूबी से समझने वाले मेरे जैसे सामान्य पाठक एक बार को अर्थ को पकड़ने में सोचते रह जाते हैं और उत्तर आधुनिकता को अपने हलक से आसानी से उतारने में भी दिक्कत महसूस करते हैं। असल बात तो यह है कि पिछले तर्क यहाँ कोई महत्त्व नहीं रखते हैं। लेखक इस पुस्तक के फ्लैप में इसका सार देते हैं, "कुरु कुरु स्वाहा" उपन्यास इस प्रकार से है:– "नाम बेढब, शैली बेडौल, कथानक बेपैंदे का। कुल मिलाकर बेजोड़ बकवास। अब यह एक उत्तर आधुनिकता पब्लिसिटी स्टंट है या अपने पाठकों की पूर्व परीक्षा।"** [1]

कुंजीभूत शब्द– आधुनिकता सांस्कृतिक, परंपराओं, प्रतिरोध, शब्दार्थ का केंद्रवाद, जबरदस्त, वैश्वीकरण।

बहरहाल, यह कथन कई सहृदय पाठकों की संख्या को कम करता है। उपन्यास को महान बनने से रोकता है। शायद उत्तर आधुनिकता की यह शर्त यहाँ पर लागू हो जाती है कि कथानक महानता लिए ही हो ही नहीं, महानता के आदर्श को उत्तर आधुनिकता स्वीकार नहीं करती है। किसी आदर्श को पाने की कल्पना लेकर वहाँ प्रवेश करना पाठक को निराश करना ही होगा। वास्तव में उत्तर आधुनिक कहे जाने वाला साहित्य अपने लिए विशेष पाठक की मांग करता है अथवा दूसरे शब्दों में कहें तो पुरानी आधुनिकता, आदर्श एवं सपने लिया हुआ पाठक उसे स्वीकार भी नहीं है।

बहरहाल, "कुरु कुरु स्वाहा" उपन्यास की एक व्याख्या दे देना सबसे मुश्किल काम है। यहाँ पर कथानक पर कथानक है फिर भी कथा ढूंढने निकलिए, कथा हाथ नहीं लगती है। अस्थिर और चंचल कथानकों के बीच वह कई जगह बदलती जाती, सिचुएशन स्पष्ट नहीं होती है। लेखक ने यहाँ पैरोडी अथवा व्यंग का इस्तेमाल भी खूब किया है जो किसी गंभीर बात को कह डालने का तर्क है क्योंकि लेखक स्वयं यह मानता है कि पैरोडी का उपयोग अपने आप में जिम्मेदार व गंभीर है और भावुकता का उत्तरआधुनिकता में स्थान ही नहीं है।

अस्तु, यहाँ पर "कुरु कुरु स्वाहा" उपन्यास पर बात करनी है जिसमें अपनी पिछली कई मान्यताओं का है स्वाहा। इस उपन्यास में लेखक भी कथा का पात्र है और इससे भी आगे कहें तो उसके भीतर दो जमुरे और घुसे हुए है एक या जोशीजी. वह तो लेखक लेखक है। दूसरे "मैं" अर्थात कथा कहने वाला। जो अनुवादक है और तीसरे मनोहर जो भोले स्वभाव वाला है। एक पहुँचेली बाई है जो नायिका हैं, गर्लफ्रेंड है। यहाँ फिल्मी समाज है। दलाल उपस्थित होते हैं। सिनेमा व नाटक की कई कई सिचुएशंस सी आती रहती हैं और तलाश रहती है कि लेखक उत्तर आधुनिकता में क्या कहना चाहता है:–

"देखिए, भले ही यह साली सिचुएशन इस सृष्टि में तीन अरब तैंतीस करोड़ तैंतीस लाख,तीन हजार तीन सौं तैंतीसवीं बार रिपीट हो रही हो। इनका अनुभव समझे ना साहब, यूनीक हो।" [2]

मतलब, उत्तर आधुनिकता यूनीक तरह से अपनी बात कहती है।उत्तर आधुनिकता से जुड़े चिंतक सुधीश पचौरी भी अपनी चिंता व्यक्त कुछ इस प्रकार करते हैं:–

"साहित्य संस्कृति का केंद्र च्युत होना इस वातावरण में अनिवार्य है। वे अपने आदिकालीन प्रचारक रूप को त्याग देते हैं। वे या तो नए प्रचार औजार बन कर रहते हैं या फिर कोने में पड़े पुराने बर्तनों की तरह होते हैं जो कबाड़ी को बेच दिए जाएंगे। अनुभवों से बेगानेपन की चरम घड़ी में साहित्य कैसे बचें?" [3]

आगे की कथा की बात करते हैं। कथानक में "पहुँचेली" नामक स्त्री है, वह बतौर नायिका है। उपन्यास में वह छाई हुई है। उपन्यास, शुचिता, पवित्रता, शुद्धता किसी आदर्श को लेकर बात नहीं करता। उत्तर आधुनिकता यह है भी नहीं। लेखक पहुंचेली के प्रति जिज्ञासु हैं, मगर पहुंचेली उसे जासूसी का नाम देती है अतःउपन्यास का वातावरण कुछ इस प्रकार है देखिए:–

"एक होती है वैश्या और जासूस वैश्या द्वारा पकड़ा जाता है जबकि जासूस को वेश्या पकड़नी है।" [4]

सच बात तो यह है कि इस उपन्यास का कथानक ही नहीं पकड़ा जाता है। कथा अस्थिर, चंचल है, उसमें ठहराव नहीं है। चलते चलते कथा एकदम बिखर जाती है, तब सारी भौतिकता नदारद। सारा अस्तित्ववाद गायब। उपन्यास में जोशी, मनोहर और मैं पता नहीं कब कौन नया रूप धारण कर लें, पता ही नहीं लगता। एक व्यक्ति ने दो जमूरे और है। यह पहले भी कहा है, पहुंचेली, कभी जोशी जी से बतियाती हैं तो कभी जोशी जी में ही मनोहर न जाने कब प्रकट हो जाता है। स्थिर पात्र तक उपन्यास में नहीं मिलते हैं। फिल्मी संस्कृति है, बम्बई शहर हैं, फिल्मी स्क्रिप्ट तैयार होती है। वृतांत टूट जाते है कहना होगा कि अपनी संरचना में एक ऐसा उपन्यास है जो किसी भी कथा को बनने नहीं देता। नायिका के साथ आपबीती की कथाएं टुकड़ों में आती है। सुधीश पचौरी भी इस तरह के उपन्यास को इस तरह कुछ समझ पाए हैं:– "उत्तर आधुनिक लेखक बिना नियमों के खेल खेलते हैं। इसलिए साहित्य सिर्फ संभावना होता है, संभव नहीं होता। पाठ या कृति घटना मात्र होती है, इसलिए वे अपने सर्जक नहीं होते। उनका अर्जन बहुत तुरत फुरत होता है।" [5]

उत्तर आधुनिकता का पुरानी मान्यताओं से दूर दूर तक नाता नहीं है। पिछली मान्यताएं, संस्कार एवं संस्कृति को हू– ब– हू मानना उत्तर आधुनिकता की सीमा में आता ही नहीं है।समाज के प्रति ही नहीं, धार्मिक कर्मकांड भी इस विमर्श में अनछुए नहीं रह पाए हैं। साहित्य के साथ साथ समाज में भी बहुत से कर्मकांडी इस उत्तर आधुनिकता के परिणाम को अपने सामने गुजरते हुए देखते रह जाते हैं। जबकि यह भी दीगर बात है कि भरे हिंदुस्तान में धर्म की नई व्याख्या उठाना भी किसी गंभीर मुददे से कम नहीं है। आज का पोस्टमॉडर्न समाज सब्सिट्यूट की बात करता है उसे शॉर्टकट ही शॉर्टकट्स चाहिए। उसमें वे ढूंढ भी लिए है। मसलन, उपन्यास में नाटक का एक सीन कुछ इस तरह रचा है। "यं रं लं वं" नामक व्यक्ति हैं, मरता हुआ आदमी। जो मरने से पहले पूजा पाठ करना चाहता है। आचमनी की जरूरत है। कॉफी स्पून से काम चलाना पड़ेगा, धोती की जगह तौलिया बांधता है, दीप जला ही हुआ है बिजली का। गंगे च यमुनेचौव गोदावरी सरस्वती यानी कि हैंडपंप विकल्प है। पहुंचेली ने एक पिस्तौल की गोली निकाल कर कह दिया–यह है गणेश।गणेश का प्रतीक बना दिया।दो पेंसिलों को मोड़ कर सलीब का रूप दिया उसने। यह ब्रह्मा जी चार वेदों के ज्ञाता का प्रतीक का प्रतीक बन गया। गोबर कहाँ है? पेंसिल कागज लिया, गोबर भी लिख काम चला लिया गया। बार बार गंध पुष्प, अक्षत समर्पयामि फिर आचमनी। बहुत बोरियत का काम समझा। घी की धारा कहाँ? पानी की धार गिरा दो,कह दिया। यह सब और इसके भी आगे देवी– सप्तशती के अपराध। स्रोतं का पाठ सिर्फ अनुप्रास अलंकार सुनाने को पढ़ जाना। जनःको जानीते जननी जपनीयं जपविधौ यह स्पीड की आधुनिकता उत्तर आधुनिकता है या किसी सांस्कृतिक अटैक की स्थितियां अथवा शिरोधार्य किए जा सकने वाले विकल्प ? वास्तव में उत्तर आधुनिकता नया वातावरण को लेकर आती है:–

"उत्तर आधुनिकता लेखक के अवसान की घोषणा करती है और पाठक के वर्चस्व को स्वीकार करता है।" [6]

संदर्भों से जुड़े रहकर नई व्याख्यानों का स्वीकार उसे हैं और सिद्धांकी की उसे पसंद नहीं। फिर अलंकारों से जुड़ाव रखकर सप्तशती के इस श्लोक को यहाँ रखने की जोशी जी को क्या जरूरत पड़ गई थी? यह है उत्तर आधुनिक विडंबना। अतीत राग बनने की दिशा में स्वयं को झटक देने का क्रम उपन्यास में आया है। सच तो यह है कि उत्तर आधुनिकता सेंटीमेंटस को नकारती है, लेकिन हिंदी साहित्य में यह उत्तर आधुनिकता इतना सिर चढ़कर भी हमारे यहाँ नहीं आई है कि इस विमर्श से कुछ दूरी रखने वाले पाठकों को कमतर मान लिया जाए या बड़ा मान लिया जाए जैसा कि इसके चिंतकों को यह भ्रम हो सकता है।

उत्तर आधुनिकता नए विमर्श पैदा करती है। यूनीक होने की बात पहले भी कही गई है। निर्विघ्न कार्य होने की संभावनाओं को न तो मीडिया का सच न ही नए बाजारवाद का सच, न नव संस्कृतिवाद का रूप और ना इन सब से जुड़ा उत्तर आधुनिकतावादी नकार पा रहा है। उपन्यास बहुत सारे विमर्शों को उठाते हुए यह भी कहता है कि–

"देवताओं को ही नहीं, पितरों को भी प्रसन्न करना पड़ेगा, उन्हें इग्नोर करने से कैसे चलेगा निर्विघ्न कार्य?" 7

जब उत्तर आधुनिकता के कद्दावर लेखक यह कहने लगे तब यह चर्चा भविष्य के हाथों में छोड़ देनी चाहिए कि पितरों को भी जब तब याद करने वाले व उत्तर आधुनिक इमेज देने वाले लेखक किस दिशा की ओर तक बढ़ना चाहते हैं और अंत में यही बात रखनी होगी कि उत्तर आधुनिकता साहित्य में जिस तरह से आ ही गई है। अब उसके स्वीकार्य अथवा नकार की स्तिथि बहुत पीछे की बात रह गई है।

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जोशी, मनोहर श्याम, "कुरु कुरु स्वाहा" (फ्लैप से) राजकमल प्रकाशन प्रथम संस्करण।
2. उपरिवत, पृष्ठ 17.
3. पचौरी, सुधीश, उत्तर आधुनिकता वाद और उत्तर संरचनावाद दिल्ली, हिमाचल पुस्तक भंडार 1994, पृष्ठ 14.
4. जोशी, मनोहर श्याम,कुरु कुरु स्वाहा, राजकमल प्रकाशन प्रथम संस्करण। पृष्ठ 45.
5. पचौरी, सुधीश, उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनावाद, हिमाचल पुस्तक भंडार दिल्ली 1994 पृष्ठ 64.
6. इस्सर,देवेन्द्र.साहित्य सिद्धांत और समालोचना,एम एच डी5,इग्नु 2001, पृष्ठ 130.
7. जोशी, मनोहर श्याम, कुरु कुरु स्वाहा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली। प्रथम संस्करण 2019.

*****